# 'मोक्ष' विवेचन

(साध्वीश्री पुण्यदर्शनाश्रीजी महाराज)

सम्पूर्ण ऐहिक एवं पारलौकिक मुक्ति के लिये श्री वीतराग सर्वज्ञ तीर्थंकर प्रभुने अपने अन्तिम पुरुषार्थ अर्थात् संपूर्ण स्वतंत्रता प्राप्ति का जो मार्ग बतलाया है उसे हमें जानना एवं उस पर आचरण कर अपने जीवन को धन्य बनाना है।

मोक्षपथ का ज्ञान, उसे जीवन में अंगीकार करना और उसी का ध्यान करना सम्यग्ज्ञान सम्यग्दर्शन एवं सम्यग् चारित्र कहा जाता है। सत् ज्ञान सत् मान एवं सत्कार ही मोक्ष-मार्ग है। महान् आचार्य श्री उमास्वाती के मोक्ष-शास्त्र का यही मंगल है। "सम्यग् दर्शन - ज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गाणि"

"ज्ञान - क्रियाभ्यां मोक्षः"

हमें चिंतन करना है कि मोक्ष के विषय में क्या जानें, क्या मानें ? क्या आचरण करें ! जिसमें हमारा साध्य सिद्ध हो जावे। निर्ग्रन्थ के प्रवचन ही आदरणीय हैं निर्ग्रन्थ के प्रवचन ही ध्येय हैं। निर्ग्रन्थ के प्रवचन ही ज्ञेय हैं। उन्हीं को जानें, मानें तथा उन्हीं पर जीवन को आचरित करें। वचन बोलना मात्र है किन्तु प्रवचन प्रकृष्ट वचन है।

मोक्ष-मार्ग में उत्कृष्ट वचनों का ही उपयोग है एवं ऐसे वचन निर्ग्रंथ के ही हो सकते हैं। जिनके मन में मनसा, वाचा एवं कर्मणा राग द्वेष की ग्रंथियां हैं उनके वचनों का मोक्ष-पथ में कोई महत्त्व नहीं।

गुणदोषों का ज्ञान करने के लिए वीतरागी हृदय होना आवश्यक है। निर्ग्रन्थ के प्रवचन चाहिये। और निष्पक्ष पुरुषोत्तम की आत्मासे ही सत्य प्रकाश प्रकाशित हो सकता है।

ज्ञाने मोक्षः । ज्ञानात् ऋते न मोक्षः ।

जो आशाओं के दास हैं वे संसार को जीत नहीं सकते जिनकी आशा दासी है वही जगत को जीत सकता है। ज्ञान के अभाव में हम आशाओं के दास बन जाते हैं।

ज्ञान को एकत्रित करके हम आशाओं के जाल से मुक्ति पा सकते हैं। इच्छा को समझने तथा समझाने से आत्म-कल्याण का मार्ग सरल बन जाता है।

पांच इंद्रियों के विषय एवं कषायों का साम्राज्य इच्छा पर शासन करता है। दूध में विष विषमता उत्पन्न करता है। उसी प्रकार संसार में विषय वासना चारित्र के शुद्ध दूध को विषमय बना देती है। हम जब यह ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं तो संसार के प्रति विरक्ति हो जाती है विषय-वासना में डूबने से अनंतकाल समाप्त हो जाता है।

इसके विपरीत जब ज्ञान दशा जाग्रत हो जाती है तो संसार सागर को पार करने का उपाय मिल जाता है। अतः अन्तर में यह ज्ञान सतत कहो, "तू तारामां डूबीश, तो तने तृप्ति थशे, तो ज तू संसार ने तरी शकीश"

अनुभव कहता है एक इच्छा समाप्त होती है तो हजार इच्छाओं को उत्पन्न करती है। जब तक संसार है इच्छाओं को विराम नहीं है अतः मनमें संसार को नष्ट करो।

साध्वीश्री पुण्यदर्शनाश्रीजी

मोक्ष इच्छाओं की पूर्ण समाप्ति है। जब हम इच्छाओं का त्याग करते हैं तब मोहनीय कर्म उग्र हो जाता है इन्द्रियाँ आत्मा को बाँधने का प्रयत्न करती हैं अतः मोहनीय वस्तुओं का त्याग ज्ञानपूर्वक करना मोक्ष मार्ग है। "मुत्ताणं मोअगाणं"

देवेन्द्र का कहना है प्रभु मुक्त है मोचक हैं, अतः मुक्ति दे सकते हैं। स्वतंत्र व्यक्ति ही स्वतंत्रता दे सकता है। जो स्वयं वासनाओं के बंधन में जकड़ा है उससे दूसरे बंधन को छुड़ाने की इच्छा करें तो अरण्य में रोदन के समान है।

वस्त्रों की मलिनता साबुन पानी से दूर होती है उसी प्रकार चित्त की मलिनता वीतराग पुरुषोत्तम के वचनों का ज्ञान, श्रद्धा और क्रिया से उपयोग करना मोक्ष प्रक्रिया है। हजारों पुस्तकों का ज्ञान वैसे ही निरर्थक है। जैसे पानी साबुन शब्द बोलने से उसकी क्रिया नहीं हो सकती वैसे ही जीवन में उसका आचरण नहीं करने पर ज्ञान भी निरर्थक हो जाता है। श्रद्धा से आचरण ही चित्त शुद्धि की प्रक्रिया है।

मोक्ष क्या है? संसार की वासनाओं, इच्छाओं, धारणाओं से सुखेच्छा से मुक्त होना। वैसे आत्मा का स्वरूप शुद्ध, बुद्ध एवं मुक्त है किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से हम अपनी मिथ्यात्वमयी धारणा से अनादिकाल से बंधे हैं। उस मिथ्यात्वमयी धारणा से छूटना ही सम्यग् दर्शन है। जो मोक्षपथ का प्रथम सोपान है। राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ और काम के त्याग का अभ्यास प्रारंभ करना इसका दूसरा सोपान है। परिग्रह, त्याग तीसरा सोपान है। अज्ञान-मिथ्यात्व का त्याग चतुर्थ सोपान है। मोह त्याग मोक्ष का पंचम सोपान है।

जब हमें संपूर्ण अनुभव होगा कि कर्म की श्रृंखलाओं के साथ जड़ तत्वों का जाल भी कट गया है। तब मन—वचन तथा काया की सारी प्रवृत्तियां आचरित शुद्धता के प्रकाश का आलोक करेगी। एक असीम शान्ति की अनुभूति हृदय में होगी।

हमारे मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय एवं योग रूप पांच आश्रवों का परित्याग स्वतः ही हो जायेगा। यही मोक्ष का प्रभा मंडल है। आत्मा शुद्ध प्रकाश में ज्योतिरूप होती हुई मोक्ष सुख की ओर प्रवृत्त होगी।

सेयंबरोय आसंबरोय, बुद्धोअ अहव अन्तोवा ।
समभाव भावि अप्पा, लहेइ मुक्खं न संदेहो ।

श्वेताम्बर, दिगम्बर या बुद्ध हो कोई भी हो जिसकी आत्मा समभाव में भावित हो उसे मोक्षप्राप्ति में कोई संदेह नहीं।

अतः धर्म क्रियानुष्ठान इष्ट वस्तु की आशा बिना मोक्ष प्रगति प्राप्ति हेतु आगे बढ़े।



धर्म बड़ा संसार में, दया क्षमा अरु दान ।
जयन्तसेन यही धरो, स्वपर होत कल्याण ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org